दीमक से बचाने के लिए नीम खली या कीटनाशक अर्थात् एन्डोसल्फॉन का 1 प्रतिशत का घोल बनाकर छिडकाव किया जाना चाहिए।

पॉटिंग मिश्रण

विभिन्न रुट ट्रैनर साइजों में कुल 37 प्रकार के पोटिंग मिक्चर का प्रयोग किया गया। जिसमें अधिकतम पौध वृद्धि रेत+मृदा+गोबर खाद (1:1:1) के साथ प्रति पौध 6 ग्राम सिंगल सुपर फास्फेट में पाई गई। अतः यह मिश्रण इस प्रजाति की पौध वृद्धि के लिये अत्यंत उपयोगी होगा।

रुट ट्रैनर का साइज

300 से 400 सीसी साइज के रुट ट्रैनर पौधो की अच्छी वृद्धि के लिए उपयुक्त पाये गये।

रोपण हेतु पौध ऊँचाई/आयु

उपरोक्त साईज के रुट ट्रैनर मे तैयार रोपण के समय पौधे की आयु 06 से 08 माह एवं कुल लंबाई 88 से 120 सेमी या उससे अधिक होनी चाहिए। रोपण के पश्चात् प्रारंभिक अवस्था में कुछ समय तक लगातार सिंचाई एवं निंदाई की आवश्यकता होती है।

उपयोग

यह तेल देने वाला बीज है। इसकी लकड़ी का उपयोग फर्नीचर बनाने में किया जाता है। इसके चारे का उपयोग मवेशियों को खाने के लिए किया जाता है। ताजे छाल का उपयोग आंतरिक खूनी बवासीर के रोग में उपयोग किया जाता है। रक्तशोधन, कुकर खांसी में बीज का चूर्ण या बीज को पानी में घिसकर देते

है। बच्चो को कुकर खांसी से बचाने के लिए इसके बीजों की माला भी बनाई जाती है। इसका तेल कृमिनाशक, रक्तपित्तकारक तथा नेत्र रोग, वात पीडा, कुष्ठ एवं खुजली को नष्ट करता है। इसके लेप से त्वचा विकार दूर होते हैं। इसके बीज से निकलने वाला तेल बायोडीजल के रूप में उपयोग किया जा रहा है एवं बीज से प्राप्त खली का उपयोग खाद के रूप में किया जा रहा है। जिसके कारण इस वृक्ष का महत्व और भी बढ़ गया है।

संपर्क

डॉ. अर्चना शर्मा

वरिष्ठ वैज्ञानिक

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर (म.प्र)

(0761) 2666529, 2665540

करंज

रुट ट्रेनर में उच्च गुणवत्ता के पौध तैयारी

(पोंगेमिया पिन्नेटा)

वन उत्पादकता प्रभाग

राज्य वन अनुसंधान संस्थान

पोलीपाथर, जबलपुर (म.प्र.) 482008

www.mpsfri.org

Scanned with OKEN Scanner

करंज-रुट ट्रैनर मे उच्च गुणवत्ता के पौध तैयारी

प्रजाति का नाम - करंज
वनस्पति का नाम- पोंगेमिया पिन्नाटा

परिचय

यह भारतीय बीच वृक्ष के नाम से भी जाना जाता है। यह लैग्यूमिनैसी फैमिली का वृक्ष है। इसे स्थानीय भाषा में करंज अर्थात् कंजी भी कहते हैं। यह अत्यंत उपयोगी वृक्ष है। इस वृक्ष का प्रत्येक भाग अपनी उपयोगिता के लिए जाना जाता है।

पहचान

यह मध्यम आकार एवं कम गोलाई अर्थात् अधिकतम ऊँचाई 18 मीटर एवं गोलाई 1.5 मीटर तक होती है। इस वृक्ष की छाल गहरे स्लेटी रंग की एवं पत्तियां चमकदार होती हैं। इसके फूल सफेद गुलाबी रंग के होते हैं।

प्राप्ति स्थान

लगभग संपूर्ण भारत में पाया जाता है। यह अधिकतर नदी, तालाब एवं तटीय क्षेत्र के किनारे पर पाया जाता है। इसका वृक्षारोपण सडक के किनारे एवं अनुपजाऊ जमीन पर जलाऊ एवं तेल उत्पादन की दृष्टि से किया जा रहा है।

स्थानीय कारक (Locality Factor)

यह सभी प्रकार की मिट्टी में लगाया जा सकता है परंतु रेतीली पथरीली मिट्टी में पानी के स्त्रोत में अच्छी बढ़त करता है। यह अत्यंत धीमी गति से बढने वाला शुष्क प्रतिरोधी वृक्ष है।

बीज चक्र

परिपक्व वृक्ष में प्रतिवर्ष बीज आता है। जो कि अप्रैल से जून के मध्य पककर तैयार होता है।

ऋतुजैविकी (Phenology)

इसमें पतझड़ का समय नवंबर से जनवरी तक होता है। इस वृक्ष में पुष्पन जनवरी से मार्च के मध्य होता है, जबकि फल अप्रैल से जून के मध्य में पककर तैयार होते हैं। इसके फल भूरे पीले रंग के काष्ठीय एवं 04 से 7.5 सेमी लंबे और 1.5 से 03 सेमी चौडे नुकीले होते हैं। प्रत्येक फल में एक से दो बीज पाये जाते हैं।

प्रतिकिलो बीजों की संख्या

प्रतिकिलो बीजों की संख्या 1000 से 1100 तक होती है

जीवन क्षमता अवधि

बीज की जीवन क्षमता अवधि 06 से 08 माह तक रहती है।

सुसुप्तावस्था

बीज में किसी भी तरह की सुसुप्तावस्था नहीं पाई जाती है।

अंकुरण क्षमता

बीज की अंकुरण क्षमता 60 से 70 प्रतिशत तक होती है।

पौध प्रतिशत

पौध प्रतिशत वातावरण पर निर्भर करता है अर्थात् छायादार स्थान एवं पर्याप्त पानी के साथ-साथ खरपतवार रहित होने पर पौध प्रतिशत 40 से 50 प्रतिशत तक देखी गई है।

उपयुक्त भंडारण विधि

वायुरोधी पात्र मे कम तापमान पर भंडारित किया जाना उपयुक्त होता है।

उपयोगिता की अवधि

बीज को संग्रहण के पश्चात् 06 माह के अंदर उपयोग कर लिया जाना चाहिए क्योंकि तेलीय प्रजाति का बीज होने के कारण बीज की अंकुरण क्षमता तेजी से कम होती जाती है।

बुआई पूर्व उपचारण

बुवाई पूर्व बीज को ठंडे पानी में 24 घंटे डुबोकर उपचारित करने से अंकुरण शीघ्र आता है।

अंकुरण हेतु उपयुक्त माध्यम

अंकुरण हेतु छनी हुई रेत का उपयोग किया जाना चाहिए।

बुआई का समय

बीज की बुवाई हेतु मई से जून माह के मध्य का समय उपयुक्त होता है।

100 पौधे हेतु आवश्यक बीजों की मात्रा

100 पौधे तैयार करने हेतु लगभग 250 ग्राम बीजों की आवश्यकता होगी।

बुआई हेतु उपयुक्त विधि

यह बीज से आसानी से लगाया जा सकता हैं बीजों को रोपणियो की क्यारी में अप्रैल-मई में बोते है। क्यारीयों में 02 से 03 सेमी की छनी हुई रेत की परत बिछाकर बुवाई करना उपयुक्त होता है। अंकुरण 10 दिन बाद शुरू होता है। एवं एक महीने मे पूरा हो जाता हैं। परंतु सीधे उक्त उपचारण से बीज उपचारित कर रुट ट्रैनर में भी बीज की बुआई की जा सकती है।

रुट ट्रैनर में बीमारी एवं बचाव

रुट ट्रैनर में बीज अंकुरण के साथ अन्य खरपतवार भी आ जाते हैं जो कि मुख्य फसल के साथ प्रति स्पर्धा करते हैं एवं हानि पहुंचाते हैं जिन्हें समय-समय पर निकालना अत्यंत आवश्यक होता है। इसके लिए विशेष प्रकार के खरपतवारनाशक का उपयोग कर मुख्य फसल को होने वाली क्षति से बचाया जा सकता है।पौधे की जड़ो को

Scanned with OKEN Scanner